

रानी अवन्तीबाई लोधी

भारत के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन के महान नेतृत्वकर्ताओं में रानी अवन्तीबाई लोधी एक महत्वपूर्ण उपस्थिति हैं। उनका जन्म मध्यप्रदेश के सिवनी जिले के एक गाँव मनकेहणी में 16 अगस्त 1831 को हुआ था। इनके पिता राव जुझार सिंह जमींदार थे। माँ कृष्णा बाई की ये लाड़ली पुत्री थीं। अवन्तीबाई बाल्यकाल से ही वीरता, साहस व पराक्रम के गुणों से ओतप्रोत थीं। बचपन में ही इन्होंने तलवारबाजी व घुड़सवारी में महारत हासिल कर ली थी। इनका विवाह विक्रमादित्य सिंह से हुआ जो कि रामगढ़ रियासत के राजा लक्ष्मण सिंह के सुपुत्र थे। लक्ष्मण सिंह के देहावसान के पश्चात विक्रमादित्य सिंह राजा बने। पति की अस्वस्थता के कारण राज्य संचालन की बागडोर राजकार्य में निपुण रानी अवन्तीबाई लोधी ने सँभाली। इनके दो पुत्र हुए अमान सिंह और शेरसिंह।

गवर्नर जनरल डलहौजी की 'हड़प नीति' ने रामगढ़ रियासत को भी प्रभावित करना चाहा। अस्वस्थ विक्रमादित्य सिंह को अयोग्य व रानी के दोनों पुत्रों को नाबालिग घोषित कर रामगढ़ राज्य पर 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स' की कार्रवाई कर दी गई। इसके अन्तर्गत 'रामगढ़ राज्य' को ब्रिटिश अधिकार में लेकर संचालन हेतु अधिकारी नियुक्त किए गए। अँग्रेजों की इस 'हड़प नीति' का कुछ राजे-रजवाड़ों ने विरोध किया। इस क्रम में रानी अवन्तीबाई का विरोध निर्णायक रूप से चरितार्थ हुआ। उन्होंने कोर्ट ऑफ वार्ड्स के तहत नियुक्त अधिकारियों को रामगढ़ से बाहर निकाल दिया तथा रामगढ़ का शासन स्वयं संचालित किया। रानी ने अँग्रेजों के कर संबंधी निर्देशों का पालन नहीं करने का किसानों को आदेश दिया। इस निर्णय से रानी अवन्तीबाई की लोकप्रियता क्षेत्र में बढ़ती चली गई।

प्रथम स्वाधीनता संग्राम प्रारंभ होने पर रानी अवन्तीबाई ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संगठित होकर अँग्रेजों से मुक्ति की पहल का उद्घोष किया। इस हेतु उन्होंने राजाओं, जमींदारों, मालगुजारों को एक पत्र और दो काली चूड़ियों की एक पुड़िया वितरित की। पत्र में रानी का सन्देश था "अँग्रेजों से संघर्ष के लिए तैयार रहो या चूड़ियाँ पहनकर घर बैठो।" इस तरह रानी ने व्यापक समर्थन प्राप्त किया तथा संगठित होकर अँग्रेजों से संघर्ष किया। 23 नवम्बर 1857 को खैरी के प्रसिद्ध युद्ध में रानी अवन्तीबाई व उनकी संगठित सेना ने मंडला के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर वाडिंग्टन की फौज को परास्त कर अपनी नेतृत्व क्षमता और पराक्रम को प्रमाणित किया।

पराजय का प्रतिशोध लेने व रामगढ़ पर आधिपत्य स्थापित करने के मंसूबों के साथ अँग्रेज निरन्तर प्रयासरत रहे लेकिन सीमित सैन्य शक्ति में भी रानी का मनोबल शौर्य व पराक्रम से ओतप्रोत रहा। मार्च 1858 में अँग्रेज सेना ने रानी व उनके सैन्य दल पर आक्रमण किया। दोनों पक्षों के बीच हुए घमासान युद्ध में रानी अवन्तीबाई ने शौर्यपूर्वक संघर्ष करते हुए, स्वयं को अँग्रेजों से घिरता हुआ देख, 'बैरी के हाथ अंग न छुए जाने' के अपने संकल्प का स्मरण कर, अपनी तलवार से आत्मबलिदान कर लिया। युद्ध भूमि में ऐसे अन्त से जहाँ रानी ने स्वाभिमान, साहस, वीरता को चरितार्थ किया वहीं स्वतंत्रता तथा मातृभूमि प्रेम का संदेश भी दिया। 'ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को मैंने ही विद्रोह के लिए भड़काया, उकसाया था, प्रजा बिलकुल निर्दोष है' मृत्युपूर्व दिये गये रानी के इस बयान ने हज़ारों लोगों को फाँसी व अँग्रेजों की क्रूरता से बचा लिया।

रानी अवन्तीबाई लोधी का पराक्रम, मातृभूमि प्रेम, नेतृत्व क्षमता, प्रजावत्सल नज़रिया, स्वाभिमान तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के संकल्प की निष्ठा सदैव अमर हैं।